|| सजा ||

कहानी नन्दलाल भारती

बाप को हत्या के जुर्म में पुलिस ने आंतरी थाने में कर दिया गया है । यह खबर बेटा श्रवण के कान में पिघले शीशे की तरह घाव कर दी । वह गैती तगाड़ी रेलवे लाइन पर छोड़कर सीधे घर की ओर भागा । घर में मां को अचेत और आधे दर्जन से अधिक छोटे भाई बहनों को रोता बिलखता छोड़कर वह थाने की ओर भागग । थाने की जेल में कैद बाप को अर्धचेतन अवस्था में देखकर उसे भी मूरछा आने लगा । वह गिरता इसके पहले सम्भल कर थाने के मुख्यद्वार पर रखे मटके से पानी लिया माथे पर छींटा मारा । एक गिलास पानी खुद की हलक में उतारा । गिलास भर पानी लेकर बाप की ओर बढा,तब तक तैनात प्रहरी डपटकर भगाने लगा । इतने में टी.आई.मोलकचन्द साहब आ गये । मोलकचन्द साहब श्रवण से पूछे किस कैदी से मिलना है तुमको ।

श्रवण–साहब अपने बाप से मिलना है ।

मोलकचन्द– तुम्हारे बाप का नाम क्या है ?

श्रवण–घुरहू .... ।

मोलकचन्द–अच्छा तो खूनी का बेटा है । इसीलिये इतना ताव खा रहा है । हवलदार इसकी तलाशी लो........

श्रवण–साहब मेरा बापू एक चूहा तो कभी मारे ही नही । सांप को देखते पसीना छूट जाता है । शिव शिव का जाप करते भागने लगते हैं ।चींटी पैर के नीचे भूले भटके आजाने पर ना जाने कौन कौन सा मन्त्र पढ डालते हैं । कत्ल कैसे कर सकते है साहब.....

मोलकचन्द–तुम्हारा बाप तो बहुत बड़ा कत्ली है । इतनी सफाई से खून करता है कि निशान भी नही छोड़ता । अंधे कत्ल का असली मुजरिम तेरा बाप घुरहूं ही है । जिस कत्ल की गुत्थी सुलझाने में पुलिस को कहां कहां तफदीश में भटकनाा पड़ा और मुजरिम थाने के पास में शराफत का चोला ओढे चकमा दे रहा था । कहावत कही जाती है ना गोद में बच्चा नगर में ढढेरा । वही हाल हुई अंधेकत्ल के खूनी को लेकर । खूनी शराफत का ढोंग कर रहा था थाने के पिछवाडे ही । अरे पुलिस पीछे पड़ जाये तो बडे से बड़े केस को सुलझा सकती है ।

श्रवण–साहब मेरे बापू कत्ल नही कर सकते कोई गलतफहमी जरूर हुई है । हाथ जोड़ता हूं मेरे बापू को छोड दो साहब । मेरे बापू धम्र कर्म में विश्वास करने वाले है । भला वे खून क्यों करेगे ।

मोलकचन्द– हो सकता है किसी सिध्दि के लिये । सुनो ज्यादा होशियार ना बनो । हर अपराधी बचने के लिये तरह तरह के झूठ बोलता है । आखिरकार उसका झूठ चल नही पाता। अपराधी कितनी भी सफाई से अपराध को इंजाम दे परन्तु सबूत तो छूट ही जाता है । तुम्हारा बाप झूठ बोल बोल कर थक चुका तो तुमने बोलना शुरू कर दिया । तेरा बाप खूनी है । उसे फांसी से कोई नही बचा सकता ।

श्रवण–साहब ये तो अन्याय है ।

मोलकचन्द– तेरा बाप मुजरिम है । तेरा बाप भी कबूल कर चुका है । इसका पुख्ता सबूत पुलिस के पास है । तू अपने बाप को फांसी के फंदे से बचाना चाहता है ।

श्रवण–हां साहब । मेरा बाप निरपराध है ।

मोलकचन्द–निरपराध नही तेरा बाप खूनी है । यह तो अब सिध्द हो चुका है । कल सूरज उगते ही तेरे बाप को कोर्ट में पेश कर दिया जायेगा । कोर्ट में पेशी के बाद फांसी से बचाया नही जा सकता । बस एक उपाय है बचाने के । मै तुमको बता दूंगा क्योंकि तुम अपने भाई बिरादर हो । मैं नही चाहता के अपने लोग मुश्किलों मे फंसे । मोलकचन्द की बातों पर श्रवण को कुछ कुछ यकीन होने लगा सिर्फ बिरादरी का सुनकर । वह बोला कौन सा उपाय है साहब।
मोलकचन्द–दस हजार का इन्तजाम कर लो सुबह तक ।
श्रवण–दस हजार तो दस लाख के बराबर की रकम है साहब हमारे लिये । मैं कहां से लाउंगा ।
मोलकचन्द–बाप को बचाना है तो घर बेचो । खेत बेचों । खड़ी फसल बेचों । इससे कम में तो बात बनेगी नही । आखिर खून का मामला है । बिरादरी का होने के नाते इतनी रिस्क ले रहा हूं वरना कब का पुलिस रिमाण्ड पर भेजवा दिया होता । घुरहू की सारी हड्डियां बोल चुकी होती अब तक। तुम ठीक से पहचान भी नहीं पाते अपने बाप को । इन्तजाम कर लो ।खेतीबाारी की जमीन तो होगी ही । बाप के जीवन के लिये
इतना भी नही कर सकते तो ठीक है जाओ अपने बाप से मिल लो । फिर मिलना हो पायेगा की नही ? मोलकचन्द साहब प्रहरी को आवाज देते हुए बोले ले जा इस लड़के को घुरहू से मिलवा दो उसका बेटा है ।
श्रवण–बन्दीगृह का फाटक पकड़ कर खडा हो गया । बाप बेटे दोनों की आखों से तर तर आंसू बह रहे थे। घुरहू बेजुबान हो चुका था और शरीर अधमरा सा । आखों की बाढ गवाही दे रही थी भोगी हुई यातना की । श्रवण बाप की हालत देखकर बेचैन हो उठा। वह सीधे मोलकचन्द साहब के पास गया और आंसू पोछते हुए बोला – साहब किस पाप का दण्ड दे रहे है मेरे निरपराध बाप को ।
मोलकचन्द–हत्या के जुर्म में तेरे बाप बन्द है । तुम नही जानते हो क्या ? देखो बहस करने का समय नही है । अपने बाप को मौत के मुंह से निकालना चाहते हो तो मेरी बात ध्यान से सुनो –आखिरी मौका है । कुछ कर सकते हो तो कर लो। जाति भाई होने के नाते तुमको बारह घण्टे की और मोहल्ल्त दे रहा हूं । चूक गये तो मुझे दोष मत देना। बेटा चूक गये तो घुरहू को फांसी हो जायेगी हत्या का जुर्म है ध्यान रखना। घुरहू के फांसी पर झूलने के बाद तुम्हारे खानदान की नाक कट जायेगी बिरादरी में यह भी याद रखना । कोई शादी ब्याह तक नही करना चाहता खूनी के खानदान में ।
श्रवण थाने की हवालात में बन्द बाप को शााष्टांग प्रणाम किया । श्रवण अपने बाप से बोला बापू आसूं पर काबू रखों और भगवान पर विश्वास वही इस मौत के कुये से निकालेगा । बापू जान की बाजी लगा दूंगा तुमको कैद से छुड़ाने के लिये कहते हुए वह आंतरी थाने से घर आया । मां के आसूं और छोटे भाई बहनों के विलाप ने उसे झकझोर दिया ।मां के चरणो में शीश झुकाकर वह गांव के घर घर जाकर दुखड़ा रोया पर दस हजार जैसी भारी भरकम रकम का इन्तजाम नही हो पाया । सूरज ढलने लगा था वह निराश नीम के नीचे बैठा हुआ आसूं बहाने को बेबस था । श्रवण को रोता हुआ देखकर छोटी बहन रोती हुई एक गिलास पानी लेकर आयी ।पानी का गिलास श्रवण को थमाते हुए बोली भइया तुम इतना रोओगे तो हम सब कैसे जीयेंगे । वह बहन के हाथ से पानी लेकर जल्दी जल्दी पेट में उतारा फिर कस्बे के बड़े साहूकार के पास पहुंचा । रोया विलखा अपनी पगड़ी साहूकार के पैरों पर रख दिया ।

साहूकार बोला–बेटा श्रवण तुम्हारे बाप घुरहू पुजारी खूनी नही हो सकते मैं जानता हूं । रही बात दस हजार रूपये की तो वो मैं जबान पर कैसे दे सकता हूं । दस हजार से अधिक कीमत का कोई सामान गिरवी रख दो,रूपया ले जााओ.......
श्रवण–सेठजी इतनी भारी कीमत का तो मेरे पास कुछ भी नही है ।
साहूकार–देखो समय बर्बाद ना करो । किसी धर्मात्मा के पास जाओ। मै तो साहूकार हूं गिरवी रखकर ही रकम दूंगा । सूद भी बाजार भाव से कम नहीं लूंगा । सौदा पटे तो रूपया मिल सकता है वरना और कहीं देखो ।
श्रवण–सेठजी मैं गरीब हूं । चार बीघा खेती की जमीन है । आधी में गेहूं बोया हुआ है । इतनी पैदावार नही होती कि साल भर रोटी का इन्तजाम हो जाये ।आंख खुली नही तब से मेहनत मजदूरी में लग गया हूं । कुछ दिनों से ग्वालियर दिल्ली रेलवे लाइन दिहाड़ी मजदूरी करके बाप का हाथ बटा रहा था । न जाने किसकी नजर लग गयी हमारे परिवार पर । बापू को खून के इल्जाम में फंस गये है । सेठजी मेरे बापू के बारे में तो आप अच्छी तरह से जानते है ।कई बार तो आपकी पूजा भी करवाये है ।
साहूकार–जानता हूं तभी तो तुम्हारी मदद करने को तैयार हूं वरना आज के जमाने में दस हजार दस लाख के बराबर है इतनी बडी रकम कौन देता है कर्ज में । आजादी मिले अभी महज उन्नतीस साल ही हुए है । देश कंगाली के दौर से गुजर रहा है । अपने ही अपने को ठग रहे है । बेगुनाह को गुनाहगार बनाया जा रहा है । घूसखोरी का दौर चल चुका है। मै कैसे सूदी रूपया दे दूं बिना चल या अचल सम्पति के गिरवी पर रखे । अरे घोड़ा घास से दोस्ती कर लेगा तो जीयेगा कैसे। वह तो बेमौत मर जायेगा। देखो बेटा आखिरी बार कह रहा हूं रूपया तभी दे सकता हूं जब तुम कोई सम्पत्ति गिरवी रखो । यदि गिरवी रखने की सम्पति नही है तो तुम जाओ । ना मेरा समय खोटा करो ना अपना । देखो दुकान बन्द करने का समय हो रहा है । मुनीमजी को भी तेरहवीं का भात खाने जाने है । जल्दी करो जो कुछ करना है ।
श्रवण–सेठजी दो बीघा खेत गेहूं की अधपकी फसल से भरा है । उसे गिरवी रखकर सूदी रकम दस हजार दे दो ।
साहूकार–दो बीघा गेहूं वाले खेत के साथ परती खेत को भी रखोगे तब रकम दे पाऊंगा । कल रूपये नही दे सके तो मेरे पैसा कहां से वसुल होगा ।
मरता क्या न करता श्रवण चार गवाहों की उपस्थिति में हामी भर दिया ।
सहूकार–जमीन के कागजात कहां है ।
श्रवण–घर पर ही है ।
सहूकार–कागज लाओ ।
श्रवण भागता हुआ घर गया जमीन का कागज लाकर साहूकार के सुपुर्द किया । तब साहूकार ने मुनीब से स्टाम्प पेपर मंगवाया । स्टाम्प पेपर पर श्रवण का अंगूठा चार गवाहों की उपस्थिति में लगवाया । सारी कागजी कार्रवाई पूरी हो जाने के बाद साहूकार ने मुनीब को दस हजार रूपया देने का हुक्म दिया । दो बीघा गेहूं की अधपकी फसल और दो बीघा परती खेत गिरवी रखकर रूपया लेकर श्रवण घर गया । रूपया रात भर छाती से लगाये रखाा । सूरज उगते ही श्रवण दो रिश्तेदारो के साथ आंतरी थाने पहुंचा । टी.आई मोलकचन्द जैसे श्रवण का इन्तजार ही कर रहे थे । वे उसे देखकर बोले श्रवण तुम तो आ गये । पहले ये तो बताओ इन्तजाम हुआ की नही । घुरहू को कोर्ट में पेश करना जरूरी हो गया

है । तीन दिन तक तो थाने में खातिरदारी हुई अब नही हो सकती । कोर्ट की पेशी के बाद केन्द्रीय जेल जाना होगा । खूनी को बड़ी जेल में ही रखा जाता है ।जल्दी बोलो श्रवण बेटा देखो मुंशीजी सारी कागजी कार्रवाई पूरी कर चुके है ।अब तुम्हारे उपर है कि अपने बाप को मौत के मुंह में ढकेलते हो या घर ले जाते हो ।
श्रवण पोटली मोलकचन्द की तरफ बढाते हुए बोला लो साहब ....
मोलकचन्द–पूरे तो है ना ?
श्रवण– गिन लो साहब । देर मत करो । मेरे बापू को छोड़ दो ।
मोलकचन्द–कह रहे हो तो मान लेता हूं । अपने वालों का विश्वास तो करना ही पड़ता है । कहते हुए मोलकचन्द ने हवलदार को पुकारा ।
हवलदार आया टी.आई मोलकचन्द साहब को सल्यूट करते हुए बोला येस सर । क्या हुक्म........
मोलकचन्द–घुरहू को छोड़ दो । अंधेकत्ल का कातिल कोई और है । घुरहू जैसा पूजापाठ करने वाला आदमी खून कैसे कर सकता है कहते हुए मूंछ के नीचे मुस्करा उठे ।
श्रवण अपने बाप घुरहू को लेकर घर चलने को मुड़ा इतने में टेलीफोन घनघना उठा । मुंशी ने रिसीवर उठाया । दूसरी ओर से आवाज आई साहब से बात करवाईये । मोलकचन्दसाहब मुंशी से रिसीवर रिसीवर थामते हुए घुरहू को जल्दी भाग जाने का इशारा किया । घुरहु,श्रवण और साथ आये दोनो लोग थाने से भाग खड़े हुए । तब मोलकचन्द साहब बोले हेलो कौन बोल रहा है ।
दूसरी तरफ से आवाज आयी मैं कम्पू थाने का इंचार्ज बोल रहा हूं । आप जल्दी आ जाये ।
मोलकचन्द– जरूरी काम निपटा रहा हूं नही आ सकता ।
दूसरी तरफ से आवाज आयी साहब मैं लपेटचन्द,थाना इंचार्ज बोल रहा हूं । आप आ जाइये ।बहुत जरूरी काम है ।
मोलकचन्द–किस केस में तलब कर रहे हैं जनाब ।
थाना इंचार्ज–एक्सीडेण्ट का केस है ।
मोलकचन्द–मेरा क्या लेना देना आपके थाने के केस से ।
थाना इंचार्ज–है साहब । तांगे से फूलबाग के ठीक सामने आपके बेटे का एक्सीडेण्ट हो गया है ।
मोलकचन्द–नवीन कैसे है ।
थानाइंचार्ज– स्पांट डेथ हो गयी ।
मोलकचन्द–मेरे गुनाहो का दण्ड बेटे को मिल गया ।
थानाइंचार्ज–क्या ?
मोलकचन्दसाहब–कुछ नही मैं जल्दी पहुंचता हूं ।
मोालकचन्द,टी.आई साहब बेटे की मौत के गम से उबर ही नही पाये थे कि कम्पू में बने लाखों के मकान मोलकचन्दभवन पर किरायेदारों का कब्जा हो गया । कुछ ही महिनों में नौकरी से हाथ धो बैठे । एक विपत्ति से उबर नही पाते दूसरी में घिर जाते । कुछ सालों में खानदान नस्तानाबूत हो गया। घूसखोरी से जोड़ी गयी अकूत दौलत का पहाड़ विपत्ति की आंधी में पता ही नही चला कहां उड़ गया । मोलकचन्द भीखारी हो गये । लोग उन्हे देखकर कहते मोलकचन्द साहब गरीबो का खून नही पचा पाये । गरीबों की आह में बर्बादी के शोले होते है । मोलकचान्द साहब इस शोले के चपेट में आ ही गये

।फर्ज के साथ गदारी खूब किये । भगवान की लाठी से आवाज नही उठती । हर गुनाह का दण्ड भगवान ने दे ही दिया मोलकचन्दसाहब को।
उधर घुरहू बेटा श्रवण के साथ रेलवे लाइन पर दिहाड़ी मजदूरी करने लगे दाल रोटी का इन्तजाम होने लगा । एक दिन ग्वालियर–दिल्ली रेलवे लाइन के किनारे खुदाई के दौरान उन्हें खजाना मिल गया । उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी हो गयी । वे दरिद्रता से उबर कर अकूत दौलत के मालिक बन गये । घूसखोरी की बदौलत राजा बने मोलकचन्द गली–गली भीख मांगने को मजबूर हो गये । गुनाहों के दण्ड को बोझ ढोते ढोते आखिरकार एक दिन लावारिस अवस्था पुलिस को में मरे पड़े मिले ।
मोलकचन्द की लाश को पहचानकर गोपाल साहब बोले बहुत बुरा अन्त हुआ मोलकचन्द साहब का।
मोहनसाहब–हां गोपाल साहब मोलकचन्दसाहब 1976 में हमारे अधिकारी थे । काश ऊंची कुर्सी पर विराजित लोग कुछ सीख जाते ।
गोपालसाहब–ठीक कह रहे है मोहनसाहब यदि ऐसा चमत्कार हो गया तो घूसखोरी रूपी दैत्य का अन्त हो जाएगा।

नन्दलाल भारती

आजाददीप –15 –एम– वीणा नगर, इंदौर ।म.प्र. ।–452010 फोन–0731–2574010 चलित–09753081066